भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन की विशेषताएँ (Features of Indian National Movement) :- प्रत्येक देश की राष्ट्रीय आन्दोलन की अपनी परिस्थितियाँ और विशेषताएँ होती हैं जो इस प्रकार हैं :-

(I) **दीर्घकालीन आन्दोलन (A Prolonged movement)** :- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास काफी लम्बा है। इसका उदय 18वीं सदी के मध्य से माना जाता है। सन 1885 में कांग्रेस की स्थापना के साथ भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का स्पष्ट रूप सामने आया जिसका अंत 15 अगस्त 1947 को हुआ। इस प्रकार यह लगभग 100 वर्षों का भारत का राजनैतिक इतिहास प्रस्तुत करता है। इसकी तुलना में अमेरिकी तथा आयरिश स्वतंत्रता संग्राम केवल कुछ ही वर्षों तक चला।

(II) **शांतिपूर्ण एवं क्रांतिकारी (Peaceful & Revolutionary)** :- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में मुख्यतः शांतिपूर्ण तरीकों को ही अपनाया गया। महात्मा गाँधी ने इसका नेतृत्व किया। सत्य और अहिंसा के वे पुजारी थे तथा उनका हथियार सत्याग्रह था। सत्याग्रह, सविनय अवज्ञा तथा अन्य शांतिपूर्ण तरीकों का प्रयोग कर उन्होंने आजादी हासिल की। लेकिन यह भी सही नहीं है कि भारतीयों ने छिटपुट रूप से उग्रवादी तथा क्रांतिकारी तरीकों का प्रयोग नहीं किया। खून-खराबा, तोड़-फोड़, बम विस्फोट तथा हथियारबंद लड़ाई का भी सहारा कभी-कभी लिया गया। परन्तु विशाल पैमाने पर नहीं हुआ। विशाल पैमाने पर आयरलैण्ड, चीन, हिन्दचीन, सोवियत संघ तथा अमेरिका में प्रयोग किए गए। भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन भी शांतिपूर्ण ही रहा न कि हिंसात्मक। 15 अगस्त 1947 को अंग्रेजों ने शांतिपूर्ण ढंग से सत्ता का हस्तान्तरण किया इसलिए कहा जा सकता है कि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन कोई सैनिक युद्ध न होकर एक शांतिपूर्ण और अहिंसक आन्दोलन था।

(III) **यह सामाजिक व धार्मिक सुधार आन्दोलन का भाग था (It was a part of social and religious reforms movements)** :- भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन की शुरुआत अपने आप में कोई अलग से नहीं हुई थी, बल्कि वह भारत के सामाजिक तथा धार्मिक आन्दोलन का एक भाग ही था। भारत में पुनर्जागरण का प्रारंभ 19वीं सदी के आरंभ में हुआ था। इसके लिए पूर्वी और पाश्चात्य दोनों की विचारधाराएँ उत्तरदायी थी। यह एक ऐसा आध्यात्मिक आन्दोलन था जिसने राजनीतिक स्वतंत्रता की प्राप्ति की भावना के उत्पन्न होने से पूर्व अनेक धार्मिक और सामाजिक सुधारों की आवश्यकता पर बल दिया। जिसके परिणामस्वरूप भारतीय जन[illegible]जागरण का संचार हुआ जिससे प्रेरित होकर मनुष्यों में अ[illegible] से मुक्ति प्राप्त करने की भावना प्रस्फुटित हुई।

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

(iv) यह कई विचारधाराओं का परिणाम था (It was an out come of many streams of thought) :- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन किसी एक विचारधारा का परिणाम न होकर कई विचारधाराओं का परिणाम था। एक ओर यह भारतीय पुनरूद्धार का आन्दोलन था जिसमें भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के आधार पर राष्ट्र के पुनर्निर्माण का प्रयास था। दूसरी ओर पाश्चात्य विचारधाराओं जैसे मानवतावाद, उदारवाद, राजनीतिक-चेतनावाद आदि का भी इस पर स्पष्ट प्रभाव था। इसके लिए जहाँ एक ओर राष्ट्रनायकों जैसे - राणा प्रताप, शिवाजी, गुरु गोविन्द सिंह, रानी लक्ष्मीबाई आदि अनेक स्वतंत्रता के दीवानों से प्रेरणा मिली वहीं दूसरी ओर विदेशी महापुरुषों जैसे जार्ज वाशिंगटन, मैजिनी, जे. एस. मिल आदि के विचारों से प्रेरणा प्राप्त हुई। इस प्रकार राष्ट्रीय आन्दोलन में पूर्व और पश्चिम, प्राचीन और नवीन, भौतिकवाद और आध्यात्मिकता, धर्म और राजनीति, उदारवाद और उग्रवाद, लोकतंत्र और समाजवाद सभी विचारधाराओं ने अपना योगदान किया है।

(v) यह आन्दोलन कॉंग्रेस के साथ-साथ विकसित हुआ (It was developed along with congress) :- यद्यपि भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन कॉंग्रेस के अतिरिक्त भी चला परन्तु भारतीय राष्ट्रीय कॉंग्रेस ने इसके लिए इतना अधिक कार्यक्रम चलाया कि राष्ट्रीय कॉंग्रेस और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन एक दूसरे के पर्याय बन गए। कॉंग्रेस संगठन अन्य दलों के समान संकुचित विचारधारा पर आधारित न होकर एक राष्ट्रीय संगठन बना रहा जिसने राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रीय चेतना को विकसित करने में सहायता दी। कॉंग्रेस ने ही भारतीय राष्ट्रीयता को संगठित कर उसके प्रतिनिधि के रूप में कार्य किया। जैसे-जैसे कॉंग्रेस का प्रभाव क्षेत्र और सदस्यता व्यापक होती गई वैसे-वैसे भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन भी जन-आन्दोलन बनता चला गया।

(vi) साम्प्रदायिकता की भूमिका (Role of Communalism) :- भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में साम्प्रदायिकता ने भी अपनी भूमिका अदा की है। साम्प्रदायिक दल जैसे मुस्लिम लीग, हिन्दू-महासभा, अकाली दल आदि ने साम्प्रदायिकता और संकीर्णता का प्रचार किया। इसका आधार अंग्रेजों की नीति "बाँटो और राज करो" (Divide and rule) थी। पृथकतावादी एवं कट्टर मुस्लिम दृष्टिकोण ने पृथक राष्ट्रीयता, दो राष्ट्र सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। फलतः 1947 ई० में देश की स्वतंत्रता के साथ ही उसका विभाजन भी हो गया।

(vii) संवैधानिक विकास (Constitutional Development) :- भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास संवैधानिक इतिहास के साथ जुड़ा हुआ है। राष्ट्रीय आन्दोलन के साथ-साथ 1857 ई० का संग्राम पहली महत्वपूर्ण घटना है जिसके परिणाम स्वरूप ब्रिटिश महारानी विक्टोरिया ने भारतीय उपनिवेश के शासन कार्य को स्वयं

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA

स्थान लिया। प्रारंभ में राष्ट्रीय आन्दोलन का उद्देश्य शासन कार्य में भारतीयों द्वारा स्थान प्राप्त करना था। अतः उन्हें संतुष्ट करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने कई भारतीय अधिनियमों का निर्माण किया जैसे 1861, 1892 एवं 1909 ई० के भारतीय परिषद अधिनियम। अन्त में 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन तथा 1944-45 की राजनीतिक घटनाओं ने भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम, 1947 के लिए परिस्थितियाँ पैदा की।

(vii) **विश्वव्यापी प्रभाव (World wide effect)** :- भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का प्रभाव देश की सीमा तक ही सीमित नहीं रहा। इससे प्रभावित होकर बर्मा, इंडोनेशिया तथा अफ्रीकी राष्ट्रों ने स्वतंत्रता की लड़ाई शुरू की। भारतीय नेताओं ने साम्राज्यवाद और उपनिवेशवाद के विरुद्ध विश्वव्यापी आन्दोलन चलाया। विदेशों में महात्मा गाँधी तथा जवाहरलाल नेहरू के व्यक्तित्व का व्यापक प्रभाव पड़ा। इस प्रकार भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में संसार के अन्य पराधीन देशों की स्वतंत्रता की आकांक्षा के प्रति सहानुभूति तथा संवेदना रही है।

1857 के आन्दोलन के परिणाम (Consequences of the Revolts) :-

1857 की क्रांति का भारतीय तथा अंग्रेज शासकों के पारस्परिक सम्बन्धों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। इससे भारतीय प्रशासन को आधारभूत रूप से परिवर्तित कर दिया गया। यद्यपि क्रांति निर्दयतापूर्वक दबा दी गई, पर क्रान्ति से ब्रिटिश राज का अंतःकरण जाग उठा और उसने ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन को समाप्त करने का तुरन्त निर्णय लिया। इसका प्रभाव इस प्रकार पड़ा :-

(i) **भारतीयों एवं अंग्रेजों के बीच घृणा (Hatred between Indians and Britishers)** :- गुरुमुख निहाल सिंह के शब्दों में "इस क्रांति के प्रभाव अंग्रेज और भारतीय मस्तिष्क पर बहुत बुरे पड़े।" विप्लव से पूर्व अंग्रेजों और भारतीयों का एक दूसरे के प्रति काफी उदार दृष्टिकोण था। वे एक दूसरे के दृष्टिकोण को अपनाने के लिए तैयार रहते थे, लेकिन विप्लव ने उनकी मनोवृत्ति को एकदम बदल दिया था। विद्रोह का दमन बहुत अधिक कठोरता से किया गया था जिसे भूलना भारतीयों के लिए असम्भव था।

(ii) **पाश्चात्य शिक्षा का विकास (Spread of western Education)** :- ब्रिटिश प्रशासन ने भारतीय और अंग्रेजों के मध्य खाई की अवस्था को समाप्त करने के लिए पश्चिमी शिक्षा का प्रसार प्रारम्भ कर दिया। उनका उद्देश्य यह भी था कि पश्चिमी शिक्षा का ज्ञान भारतीयों की रूढ़िवादिता को समाप्त कर देगा तथा उन्हें कानून और व्यवस्था को समझने में सहायता प्रदान करेगा।

(iii) **सेना का पुनर्संगठन (Re-organisation of the Army)** :- सन 1857 ई० के

बाद की ब्रिटिश सैनिक नीति क्रांति से पूर्ण प्रभावित थी। इस नीति में विभाजन और नियंत्रण का विचार था। भारतीय सैनिकों को क्षेत्र और जाति के आधार पर गठित किया जाने लगा तथा इन्हें एक दूसरे से मिलने न देने की विधियाँ ढूँढी गई। प्रत्येक पल्टन में यूरोपीय तत्व को शक्तिशाली बनाया गया। महत्वपूर्ण ठिकानों में अंग्रेज सैनिकों को रखा गया तथा तोपखाने को ब्रिटिश सैनिकों के हाथों में ही रखा गया।

(IV) भारत का ब्रिटिश ताज (Crown) के अधीन आना :- (Control by British Crown) :-
अगस्त 1858 ई० को भारत वर्ष का उचित शासन अधिनियम पारित किया गया। भारत का शासन ब्रिटिश ताज के अधीन कर दिया गया। 1 नवम्बर 1858 को इलाहाबाद दरबार में लार्ड कैनिंग ने इस घोषणा पत्र को पढ़कर सुनाया जिसमें लिखा था कि "ईश्वर के आशीर्वाद से जब देश में अन्दरूनी शांति स्थापित हो जाएगी तो हमारी हार्दिक इच्छा है कि भारत की सब प्रकार की उन्नति के लिए फिर से यत्न किया जाए। पार्लियामेन्ट की अनुमति से ही हमने कई कारणों से ईस्ट इंडिया कम्पनी से यह भार अपने कंधों पर लिया है इसलिए हम भारतवासियों से यह प्रार्थना करते हैं कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के साथ जो उनकी संधियाँ थी उनका हमारे द्वारा पालन किया जायेगा और हम उन राजाओं से भी आशा करते हैं कि वे भी उनका पालन करेंगे। अर्थात् भारत के सभी धर्मों के लोगों के साथ सभी स्तरों पर जनकल्याण की भावना कायम रहेगी। उनकी समृद्धि में ही हमारी सुरक्षा है और उनकी कृतज्ञता में ही हमारा गौरव है

निष्कर्ष (Conclusion) :- 1857 का विद्रोह (भारतीय स्वाधीनता संग्राम का संघर्ष) देश को आजादी दिलाने का प्रथम एवं मुख्य केन्द्र बिन्दु है। यह केवल असफल सैनिक विद्रोह नहीं था बल्कि देश से अंग्रेजी शासन को समूल नष्ट करने का संयुक्त एवं व्यापक प्रयास था। इस सशस्त्र संग्राम में न केवल हिंदु-मुसलमान बल्कि ताल्लुकेदार, जमींदार, राजे-नवाब गरीब, किसान, कारीगर, सिपाही तथा मजदूर भी साथ-साथ भेदभाव रहित अंग्रेजों के विरुद्ध लड़े। असफलता के बाद भी संघर्ष निरंतर जारी रहा जब तक कि देश को स्वतंत्रता नहीं मिली।

(समाप्त) (B.A HON'S Part III
VIII Paper)

डॉ० राजु मोची
विभागाध्यक्ष - राजनीति विज्ञान
डी.के. कालेज, डुमराँव
दिनांक - 27/04/2020

REDMI NOTE 6 PRO
MI DUAL CAMERA